विशारद प्रथम वर्ष

गायन-वादन(स्वरवाद्य)

पूर्णांक:400, **न्यूनतम:**180

क्रियात्मक:250(क्रिया:200+ मंच प्रदर्शन:50) **न्यूनतम:**128

शास्त्र:150 **न्यूनतम:**52

शास्त्र:

प्रश्नपत्र सं. १

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता-विभिन्नता का अध्ययन| स्वर समुदाय से राग पहचानना|

२) पाठ्यक्रम की निम्नलिखित सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें पं. विष्णू दिगंबर एवम् पं. भातखंडे पद्धति में लिखने का अभ्यास| दुगुन तिगुन चौगुन लयकारी में लिखने का अभ्यास|

(१) आडाचौताल, (२) झूमरा,

(३) दीपचंदी, (४) पंजाबी

३) पाठ्यक्रम के रागों की बंदिशों को/गतों को विष्णु दिगंबर एवम् भातखंदे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की क्षमता|

४) आधुनिक आलाप गान एवम् प्राचीन आलाप गान की विधि का विस्तृत विवेचन|

५) तानों के प्रकार और उनका विस्तृत अध्ययन|

६) निबद्ध गान के विविध प्रकारों का पूर्ण विवेचन|

धृपद, धमार, तराना, टप्पा, ठुमरी, ख्याल|

प्रश्नपत्र सं. २

७) गणित के आधार पर पं. व्यंकटमखी के 72 मेलों की रचना की विधि|

८) थाट-पद्धति का प्राचीन से आधुनिक काल तक का विवेचन तथा थाट पद्धति के गुणदोष|

९) रागों का समय-चक्र और रागों के विभाजन के तीन वर्गों की विस्तृत जानकारी|

१०) गायक/वादकों का सांगीतिक योगदान:-

अल्लादिया खाँ, विनायकराव पटवर्धन, श्री. ना. रातंजनकर, अल्लाउद्दीन खाँ, ओंकारनाथ ठाकुर, निखिल बॅनर्जी, बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, बिसमिल्ला खाँ|

११) निम्नलिखित विषयों में निबंध लिखने की क्षमता:-

१) ललित कलाओं मे संगीत का स्थान|

२) चित्रपट(चलचित्र) संगीत पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव|

३) शास्त्रीय संगीत : कल, आज और कल|

४) शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का महत्व|

१२) भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण|

क्रियात्मक:

१) इस वर्ष में ख्यालगायन/वादन की शैली में विकास होना अपेक्षित है|

२) राग का अपने मन से आलाप तानों द्वारा विस्तार करना अपेक्षित है|

३) अल्पत्त्व-बहुत्व तथा अविर्भाव-तिरोभाव का गायन वादन मे प्रयोग करना अपेक्षित है|

अ) रागज्ञान:

विस्तृत अध्ययन के लिए:

(१) गौडसारंग, (२) शंकरा, (३) जयजयवंती

(४) पूरियाधनाश्री, (५) हमीर, (६) कामोद

हर एक राग में एक-एक विलंबित तथा एक-एक द्रुत ख्याल/एक-एक मसीतखानी तथा एक-एक रजाखानी गत तैय्यार करनी है|

साधारण ज्ञान के लिए:

(१) मियाँ मल्हार (२) मुलतानी (३) मारूबिहाग

(४) पूरिया (५) शुद्ध कल्याण (६) दरबारी कानडा

(७) बहार

हर एक रगमें मध्य लय की बंदिशें/गतें 15 मिनट तक आलाप तान/तोडों सहित गाने/बजाने की क्षमता होनी चाहिए|

इस वर्ष के रागों में एक ध्रुपद, एक धमार, दो तराने तथा एक चतुरंग या त्रिवट इस प्रकार 5 अन्य बंदिशे तैय्यार करनी है| वादन के विद्यार्थी इनकी रचनाएँ विभिन्न तालों में तैय्यार करेंगे-रूपक झपताल, एकताल, आडा चौताल, दीपचंदी|

उपशास्त्रीय संगीत के लिए इस वर्ष कोई एक प्रकार तैय्यार करना है| पीलू, भैरवी, या जोगिया में ठुमरी, दादरा या तत्सम कोई प्रकार प्रादेशिक भाषा में |

गायन वादन की अंकपत्रिका के कॉलम में 10 अंक राष्ट्रगीत, जनगणमन, वंदेमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना इसके लिए समाविष्ट किये गए हैं|

आ) तालज्ञान:

आडाचौताल, दीपचंदी, अध्दा(तीनताल) धुमाली, चाचर अथवा झपताल का संपूर्ण ज्ञान तथा इनको तबले पर बजते हुए पहचानना| सर्वसाधारण ठेकों को तबले पर बजाने का अभ्यास| अब तक सीखे हुए तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन बोलने का अभ्यास|

अंकपत्रिका:-

सूचना:- इस परीक्षा के लिए 50 मिनट का समय निर्धारित किया गया हैं| संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत की जानेवाली विलंबित बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय देकर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछे जाएँ| हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नही है|

इस वर्ष के दो रागों मे एक बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ:13+13 अंक| इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के एक राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिशें, 8+8+8 अंक|

कुल 50 अंक|

इस वर्ष के दो रागों में संपूर्ण विस्तार के साथ एक एक बंदिश,9+9 अंक|

इस वर्ष के दो रागों में तथा पिछले वर्ष के एक राग में राग वाचक आलाप के साथ

बंदिश:4+4+4 अंक|

कुल 30 अंक|

इस वर्ष निर्धारित किये गये रागों में धृपद, धमार या तत्सम गत अथवा तालबद्ध अलंकार ठाह में:4 अंक|

चौगुन में:5 अंक|

तथा तिगुन में:7 अंक|

कुल 16 अंक|

देशकार-भूपाली, जौनपुरी-दरबारी कानडा, छायानट-कामोद देस-तिलक कामोद इन में से दो राग जोडियों की आलाप तानों के साथ तुलना:24 अंक|

इस वर्ष के रागों में तराना, चतुरंग, त्रिवट, या रूपक, झपताल, एकताल में

गत:10 अंक|

इस वर्ष के तीन तथा पिछले दो रागों के आलाप तथा तान:20 अंक|

दो तालों के ठेकों को तबले पर बजते हुए पहचानना:6 अंक|

इस वर्ष के दो तालों की जानकारी तथा ठेकों को ताली खाली दे कर बोलना:6 अंक|

किसी ताल का ठेका चौगुन, तिगुन, तथा डेढगुन में ताली देकर बोलना:3+4+6 अंक | कुल 13 अंक|

पीलू, भैरवी या जोगिया में ठुमरी, दादरा या नाट्य संगीत/वाद्यों पर इस अंग की

धुन:15 अंक|

बंदिश की पंक्ति सुन कर स्वर बोलना तथा लिखना, स्वरलिपि में बोलना तथा लिखना| अथवा राष्ट्रगीत जनगणमन, वन्देमातरम् हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना:10 अंक|

मंच प्रदर्शन:50 अंक|

(इस वर्ष के रागों में से एक राग और उपशास्त्रीय संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति|)

कुल मौखिक:250 अंक| लिखित: 150 अंक|

सर्वयोग:400 अंक|